प्रथम अध्याय

''रामदरश मिश्र : व्यक्ति और वाङ्मय''

प्रथम अध्याय

''रामदरश मिश्र : व्यक्ति और वाङ्मय''

प्रास्ताविक :

स्वातंत्रोत्तर हिंदी साहित्य क्षेत्र में डॉ. रामदरश मिश्र का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। वे प्रगतिशील रचनाकार हैं। उनका उपन्यास, कहानी, काव्य, समीक्षा, निबंध, आत्मकथा, संस्मरण, यात्रावृत्त आदि विधाओं में महत्त्वपूर्ण योगदन रहा है। सातवीं कक्षा में पढ़ रहे थे तब उन्होंने 'स्वतंत्रता संग्राम' पर नाटक लिखा था। मगर वह अप्रकाशित रहा है। उन्होंने साहित्य के हर विधाओं में सफलतापूर्वक लेखन किया है। अकृत्रिमता उनके साहित्य की महत्त्वपूर्ण विशेषता रही है। जो उन्होंने स्वयं जो देखा, भोगा, वही यथार्थ साहित्य में उतार दिया है। उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में उभरनेवाले वादों से संबंधित लेखन नहीं किया है। वे वादमुक्त साहित्यकार रहे हैं। इसके बारे में वे लिखते हैं कि -

''मैं गमले का फूल तो नहीं
कि एक सुरक्षित कमरे से
दूसरे कमरे में रख दिया जाऊँ
मैं तो पेड़ हूँ एक खास जमीन में उगा हुआ
आँधियाँ आती हैं,
लूएँ चलती हैं, ओले गिरते हैं,
पेड़ हहराता है; काँपता है,
डालियाँ और फल-फूल टूटते हैं
लेकिन वह हर बार अपने में लौट आता हैं।''[1]

उन्होंने यथार्थ को छोड़कर लेखन नहीं किया हैं। जिस प्रकार गमले का फूल आज इस कमरे में तो कल उस कमरे में शोभा बढ़ाने के लिए रखा जाता है उस प्रकार के मिश्र जी नहीं है। उनके साहित्य में आम जनता की पुकार सुनाई देती हैं। साहित्यिक राजनीति के खेमे के बाहर रहकर उन्होंने यथार्थ रूप में लेखन किया हैं। तब उन्हें बहुत संघर्ष भी करना पड़ा। वे 'अभिनव प्रसंगवश' पत्रिका के 'मेरा आकाश' नामक लेख में लिखते है कि ''जीवन एक सीधी सपाट सड़क नहीं जिस पर कोई सरल भाव से चला रहें। वह तो एक ऐसी सड़क है जो कहीं ऊँची है, कहीं नीची है, कहीं सपाट है, कहीं गड्ढ़ों से

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

भरी है, कहीं उसमें अनजाने खतरनाक मोड़ हैं, कहीं अप्रत्याशित सँकरापन है। उसपर चलते हुए बार-बार गिरना-उठना पड़ता है।''[2] इन जीवन मोड़ों को पार करते-करते उन्होंने उम्र के 82 वर्ष पार कर 15 अगस्त, 2007 में 83 वे बरस में पदार्पण किया है। उनके इस प्रौढ अनुभवों की सृजन प्रक्रिया आज भी अनावरत रूप से शुरू है। उनके साहित्य में देहात से आकर महानगर में बसे आम आदमी की पीड़ा दृष्टिगत होती है। अत: किसी भी साहित्यकार तथा उनके साहित्य को जानने के लिए उनके व्यक्तित्व एवं वाङ्मय से भी परिचित होना आवश्यक है। यहाँ डॉ. रामदरश मिश्र जी का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार हैं :-

1.1 व्यक्ति - परिचय :

साहित्य साहित्यकार के जीवन में घटित अनुभवों का प्रतिबिंब होता है। साहित्य में जो विचार होते हैं वे जीवन के घात-प्रतिघातों से निर्माण होते हैं। साहित्यकार जीवन से अनुभव ग्रहण कर अपनी प्रतिभा के माध्यम से कलात्मक रूप में उसे साहित्य में उतार देता है। उनके जीवन पर विविध परिस्थितियों का प्रभाव रहता हैं। इसे रचनाकार रामदरश मिश्र अपवाद नहीं हैं।

1.1.1 जन्म :-

डॉ. रामदरश मिश्र जी का पूरा नाम 'रामदरश रामचंद्र मिश्र' है। उनका जन्म 15 अगस्त, 1924 (श्रावण पूर्णिमा, गुरूवार) में गोरखपुर जिले के कछार अंचल के 'डुमरी' नामक गाँव में हुआ। उनका गाँव 'राप्ती' और 'गौरी' दोनों नदियों से घिरा है। इन नदियों के बाढ़ के कारण यहाँ के लोगों का जीवन बार-बार विस्थापित होता है। इसी कारण यह प्रदेश पिछड़ा है। उनके बचपन के ज्यादातर दिन इसी माहौल में गुजरे हैं। उन्हें साहित्य की प्रेरणा उनकी जन्मभूमि से ही मिलती रही है। आज वे दिल्ली जैसे महानगर में रहते हुए भी उनका जन्मभूमि के प्रति लगाव दिखाई देता है। अपनी एक गज़ल में वे कहते है कि -

''बस गया हूँ दोस्तो, दिल्ली शहर के यों तो
घर मेरा अब भी वही हाँ वही, गोरखपुर जिला है।''[3]

1.1.2 बाल्यकाल :-

रामदरश मिश्र का बाल्यकाल 'डुमरी' नामक गाँव में ही बीता है। बचपन से ही उन्हें अनेक यातनाओं को सहना पड़ा। उनका जन्म हुआ था तभी प्रसूतिगृह में कीड़े-

मकोड़ों का संकट पैदा हुआ था। उस समय बुआ ने उनकी रक्षा की। इस बारे में डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ लिखते हैं कि ''उन्हें अपनी जीवन-यात्रा में कीड़े-मकोड़े बराबर मिलते रहे लेकिन सहयोग, सहचार्य, सद्भाव का संबल भी बराबर मिला।''[4] मिश्र जी का बचपन आम देहाती बच्चों की तरह बीता है। बचपन में उन्हें खेत की रखवाली करना, बाजार जाना, स्कूल जाना, खेलना-कूदना बहुत पसंद था। वे आम के दिनों में भाइयों के साथ बगीचे में आम बिनने जाते थे। शरीर से पुष्ट होने के कारण कुश्ती लड़ना उनका शौक था। उनके आयु से बड़े लड़कों को भी वे कुश्ती में धूल चटा देते थे। अन्य देहाती परिवारों के समान उनका भी परिवार अभावग्रस्त था। उन्हें बचपन में कई बार फीस के कारण और ज्यादा हट करने पर मार खानी पड़ती थी। वे बचपन से ही स्वभाव से विनम्र और सहनशील है परंतु वे अन्याय को बर्दाश्त नहीं करते थें। वे कई बार अपने साथियों की मदद करते थे। अन्य देहाती बच्चों की तरह भूत और पिशाच की कहानियाँ सुनकर डरते भी थे। उनका बचपन प्रकृति के मनोहर सानिध्य में बीता है। जिसे वे आज भी पूरी तरह से अपने समग्र वाङ्.मय में चितारते है।

1.1.3 शिक्षा :-

मिश्र जी की प्राइमरी तथा मिडिल तक की शिक्षा पड़ोस के 'बिशनपुरा' नामक गाँव में हुई। सन् 1938 में उन्होंने मिडिल का शिक्षा पास की। सन् 1939-40 में उन्होंने 'ढरसी' गाँव में स्थित 'राष्ट्रभाषा विद्यालय' से विशेष योग्यता, बरहज से 'विशारद' तथा 'साहित्यरत्न' की परीक्षाएँ पास की। पहली बार मैट्रिक फेल होने के कारण उनका मन शिक्षा से उठ गया था। मगर डॉ. अवधनारायण द्विवेदी जी ने के समझाने के बाद उनके जीवन में महत्त्वपूर्ण मोड़ आया। सन् 1946 में वे मैट्रिक में फर्स्ट क्लास में पास हो गये।

मैट्रिक पास करने के बाद मिश्र जी ने बनारस विश्वविद्यालय से सन् 1948 में इण्टर पास किया। बनारस में ही सन् 1950 में बी.ए. तथा सन् 1952 में एम.ए. की डिग्री हासील की। एम्.ए. तक बड़े भाई रामअवध खर्चे का प्रबंध रखते थे। भाई की नौकरी छुटने के कारण घर के दायित्व का बोझ रामदरश जी के कंधो पर आया। एम्.ए. के क्लास में प्रथम स्थान हासील करने के कारण गुरुवर्य हजारी प्रसाद द्विवेदी से सौ रूपये स्कॉलरशीप मिलती थी। इन दिनों मिश्र जी के घर की हालत बहुत खराब थी। हजारी प्रसाद द्विवेदी जी से स्कॉलरशीप मिलती वह भी अनियमित रूप से।

1953 में डॉ. जगन्नाथ प्रसाद जी के निर्देशन में ''हिन्दी आलोचना की

प्रवृत्तियाँ और आधार-भूमि'' पर शोध कार्य आरंभ हुआ और सन् 1957 में पीएच्.डी. की डिग्री प्राप्त की। कंधे पर परिवार का बोझ पड़ने के कारण वे नौकरी की तलाश में इधर-उधर भट्कते रहें। कई बार उन्हें निराश होकर घर वापस आना पड़ा। उच्च शिक्षा के दरमियान गुरुवर्य हजारी प्रसाद द्विवेदी से उन्हें साहित्य लेखन की प्रेरणा मिलती रहीं। आज भी वे उनका आदर करते हैं। उन्हीं की प्रेरणा से उनका साहित्यिक जीवन फुलता-फलता रहा है।

1.1.4 माता :-

एक आदर्श सन्तान के निर्माण में माता-पिता के संस्कार बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं। वही महत्त्वपूर्ण भूमिका माता 'कंवलपाती' ने निभायी हैं। उन्होंने बचपन से ही अपने बच्चे की प्रतिभा को जान लिया था। जब रामदरश जी को उनके बड़े भाई रामअवध और रामनवल अक्षरज्ञान कराने में असफल हुए तो उन्होंने स्वयं रामदरश को अक्षरज्ञान कराया। वह धार्मिक प्रवृत्ति की कर्मठ महिला थी। वह स्वभाव से भोली थी थी। उन्हें सांस्कृतिक अनुष्ठानों तथा लोक-कथाओं का पर्याप्त ज्ञान था। शादी तथा त्यौहार में उन्हें लोकगीत गाने का शौक था। गाने के लिए वह गाँव में मशहूर थी। उनके स्वभाव का पर्याप्त प्रभाव रामदरश जी पर पड़ा है। रामदरश मिश्र जी के माताजी का दिसम्बर, 1964 में स्वर्गवास हुआ।

1.1.5 पिता :-

रामदरश मिश्र के पिता का नाम 'रामचंद्र मिश्र' था। वे अपने माता-पिता के अकेले संतान थे। वे स्वभाव से सैलानी वृत्ति के थे। उनका घर-गृहस्थी में ज्यादा ध्यान नहीं रहता था। अच्छा खाना, अच्छा पहनना, घूमना, मेले करना, बाजार जाना, बारात करना, रामायण गाना आदि के वे शौकीन थे। वे गाँव के किसी के भी सुख-दुख में जल्द ही शामील हो जाते थें। वे स्वभाव से भोले थे। कवि के मन पर भी पिता के स्वभाव का पर्याप्त मात्रा में प्रभाव पड़ा है। मिश्रजी के पिता का देहांत जनवरी, 1964 में हुआ।

1.1.6 भाई-बहन :-

मिश्र जी घर में सबसे छोटे हैं। उनके बड़े भाई 'रामअवध' तो मँझले भाई 'रामनवल' हैं। उनकी बहन का नाम 'कमला' था। पिताजी भोले तथा सैलानी वृत्ति के होने के कारण घर की सब जिम्मेदारी अनायास ही रामअवध जी पर थीं। उन्होंने कुशलता से अपनी जिम्मेदारी को निभाया तथा परिवार को गरीबी के अभिशाप से निकाला। बड़े

भाई का मिश्र जी के शिक्षा में महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है। मिश्र जी को पढाने में उनके मन में ज्यादा दिलचस्पी थी। बचपन में मिश्र जी अपनी भाई की डाँट से डरते थें। मँझले भाई रामनवल जी रंगीन मिजाज के व्यक्ति थे। पिता का उनपर पर्याप्त प्रभाव था। उन्हें मेले जाना और बाजार में घूमने का शौक था। वे गृहस्थी में ज्यादा ध्यान नहीं देते थे। इसी कारण उन्हें बार-बार बड़े भाई की डाँट खानी पड़ती थी।

1.1.7 विवाह :-

विवाह आदमी के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटना होती है। आदमी का जीवन स्थिर तथा शांत करने का कार्य विवाह करता है। वैवाहिक जीवन का भी प्रभाव साहित्य पर पड़ता है। मिश्र जी के जीवन में विवाह का मौका दो बार आया है। उनका पहला विवाह 1940 में सोलह वर्ष की आयु में हुआ था। इसी साल उन्होंने 'विशेष योग्यता' की परीक्षा पास की थी। 1947 में जब वे इण्टर प्रथम वर्ष की परीक्षा दे रहे थें उसी समय पहली पत्नी का स्वर्गवास हुआ। इसी वजह से उनका दूसरा विवाह 5 जुलाई, 1948 में 'सरस्वती जी' के साथ हुआ। दूसरे विवाह के समय वे चौबीस-पच्चीस साल के थे। उन्हें दूसरी पत्नी स्वभाव से बहुत अच्छी मिली। सरस्वती जी बहुत ही अतिथि-वत्सल नारी है। अपने अनुभवों को व्यक्त करते हुए डॉ. प्रकाश चिकुर्डेकर जी कहते हैं कि ''जब मैं साक्षात्कार के दरमियाँन उनके घर सुबह ही पहुँचा था तब चाय और बाद में बीच-बीच में कभी चाय तो कभी बिस्कुट सामने लाकर रख देती थीं। जब दोपहर का खाना परोसती तब मेरी थाली में मिश्र जी की थाली की तुलना में एकाध रोटी ज्यादा डालती। दाल भरी कटोरी और चावल से भरी थाली मेरे ही सामने रख देती और कहती - ''दूर से आए हो, ... और सुबह से कुछ खाया नहीं होगा .... ले लो।'' अत्यंत सादगी, सरलता, आदरभाव, अतिथि के प्रति आस्था और उत्साह से भरा उनका व्यवहार मुझे वहाँ कम समय में बहुत कुछ बता गया।''[6] मिश्र जी जैसे पति पाकर वह अपने को धन्य मानती हैं। वह अपने पति के बारे में कहती है ''कवि और लेखक पति तो बहुतों को मिले हैं परंतु वास्तव में पति कितनों को मिले है ? मैं कितनी भाग्यशाली हूँ कि मुझे कवि और लेखक होते हुए भी एक जिम्मेदार, सीधा और प्यारा पति मिला है, जो सही मायने में इन्सान है।''[7] सरस्वती जी घर का सारा बोझ सँभालती है। इसी कारण मिश्र जी निश्चिंत रूप से लेखन कार्य कर सकते हैं। यहीं उनके सुख-दुख की सहयोगिनी रही है।

1.1.8 परिवार :-

मिश्र जी का पूरा परिवार शिक्षित है। उनके तीन पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं। घर के सभी सदस्य सुसंस्कृत हैं। नहीं तो समाज में हम देखते है कि जिसके माँ-बाप सुसंस्कृत है उनके बच्चे बिगड़े हुए दिखाई देते हैं। दिल्ली जैसे महानगरीय माहौल में उनका परिवार एक-दूसरे के प्रति लगाव रखकर रहता है। उनका दाम्पत्य-जीवन सुखी हैं। मिश्र जी अपने परिवार को देशी संस्कार देने में सफल रहे हैं। उनके बच्चे महानगर में रहते हुए भी आधुनिकतावाद के कीचड़ में नहीं फँसे। उनके परिवार में खुलापन और मैत्री भाव है। अत: उनका छोटा परिवार, खुशहाल परिवार है।

1.1.9 गुरु :-

डॉ. रामदरश मिश्र के गुरु हजारी प्रसाद द्विवेदी रहे हैं। जब वे बनारस में शिक्षा ले रहे तब से उनका अटूट संबंध रहा हैं। आज भी उनके मन में हजारी प्रसाद के बारे में असीम श्रध्दा हैं।

1.1.10 अध्यापन :-

रामदरश मिश्र जी एक सफल अध्यापक रहे हैं। सन् 1956 में उन्होंने सयाजीराव गायकवाड विश्वविद्यालय बड़ौदा में प्राध्यापक के रूप में काम किया। फिर सन् 1957 में अहमदाबाद में सेंट झेवियर्स कॉलेज, 1959 में नवसारी में एस.बी. गाडी कॉलेज, 1960 से अगस्त, 1964 तक गुजरात विश्वविद्यालय , अहमदाबाद उनका अध्यापन कार्य क्षेत्र रहा है। अगस्त 1964 से सन् 1969 तक उन्होंने दिल्ली के पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज में अध्यापन कार्य किया। सन् 1969 में वे दिल्ली विश्वविद्यालय में आये। दिल्ली विश्वविद्यालय में 1971 में वे रीडर बने तथा सन् 1983 में प्रोफेसर बने। सन् 1990 में वे वहीं से प्रोफेसर के पद से अवकाश ग्रहण कर चुके।

1.1.11 व्यक्तित्व :-

आदमी के व्यक्तित्व के दो पहलू होते हैं - एक बाह्य व्यक्तित्व तो दूसरा आंतरिक व्यक्तित्व। बाह्य व्यक्तित्व के अंतर्गत उस व्यक्ति का पहनाव, वर्ण, कद, रहन-सहन आदि तो आंतरिक व्यक्तित्व के अंतर्गत उनके स्वभाव का तथा विविध गुणों का परिचय मिलता है। मिश्र जी ऊँचे कद, गौरवर्णी, तेजस्वी चेहरेवाले एक सरल व्यक्ति है। वे सीधे-साधे इन्सान है। उन्हें रहन-सहन में सादगी पसंद है। उनका आकर्षक व्यक्तित्व देखनेवाले को तुरंत प्रभावित करता है। उन्हें कुर्ता, जाकिट और धोती प्रिय हैं। उनके पैरों

MARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

मे सैण्डल होते हैं। उनका चेहरा सदैव हँसमुख रहता है। मिलनवाले से वे बड़ी दिल से बात करते हैं। उनका बौध्दिक पक्ष प्रबल है। उनकी रचनाओं में सबल भावुकता दिखाई देती है। भावुकता ने उन्हें जीने का रस दिया है। कोई भी चीज़ उनके मन को छू जाती है तो वह उन्हें घण्टों तक परेशान करती रहती हैं। उनका ज्यादातर समय साहित्य लिखने-पढ़ने में ही निकल जाता हैं। खेल देखना, संगीत सुनना, फिल्म तथा धारावाहिक देखना उनके शौक हैं। वे पत्रों के माध्यम अपने आत्मीय जनों से संपर्क रखते हैं। वे दूसरों के सुख-दुख में भी शामिल हो जाते हैं। नवलेखकों की रचनाओं को पढ़ना तथा उनके बारे में अपनी राय देना उन्हें बहुत पसंद है। जीवन में बनावटीपन उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं है। अत: विवेचन विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि, मिश्र जी एक स्वतंत्र वृत्ति के बहुआयामी साहित्यकार हैं।

1.2 डॉ. रामदरश मिश्र और उनका वाङ्मय :

डॉ. रामदरश मिश्र जी ने साहित्य की हर-विधा में लेखन किया है। साहित्य के संस्कार उनमें जन्मजात रहे हैं। यह स्वयं रचनाकार ने भी स्वीकार किया है। यह उन्होंने स्वयं बचपन में ही महसूस कर लिया था। जब वे दर्जा तीन-चार में पढ़ रहे थे तो उन्हें किसी लोकगीत को सुनकर लगता था कि ऐसा तो हम भी लिख सकते हैं। वैसी कोशिश भी वे करते थें। बचपन में उन्होंने सुना था कि पेड़ के नीचे पालथी मारकर बैठने से मन में सरस्वती जगती है तो वे वैसाही करते थें। वे छोटी-छोटी पंक्तियाँ जोड़ लेते और मित्रों को सुनाते थे तब उन्हें बहुत प्रशंसा मिलती थी। मित्र भी उन्हें खास आदमी समझते तो खुद कवि भी स्वयं को दूसरों से अलग समझते थे। मिश्र जी स्वीकार करते है कि साहित्य का बीज उन्हे माता-पिता से ही मिला है। इस बारे में वे प्रकाश मनु से हुई बातचीत में कहते है कि "यह बीज रक्त से ही मिला होगा ..... इसलिए की मेरी माँ और पिता दोनों भी भावुक थे। पिता तो कुछ-कुछ सैलानी घुमक्कड तबीयत के थे और भावुकता रसिकता उनमें कूट-कूटकर भरी हुई थी। वे होली आदि त्यौहारों में मस्ती में भरकर गाया करते तो देखने बनता था .... ऐसे ही स्त्रियों के गीतों में हमेशा मां सबसे आगे होती थी .... तो मुझे लगता है मनु जी, इस पारिवारिक परिवेश का भी कुछ-न-कुछ असर हुआ होगा और यों लेखन का जो बीज भाव भीतर मौजूद था, पोषण हुआ।"[8] घर में बड़े भाई रामदरश जी की कविताओं से प्रभावित होते थें। वे उन्हें खूब प्रोत्साहित करते थें।

रामदरश मिश्र जी का गाँव अभावग्रस्त होकर भी नैसर्गिक सौंदर्य से भरा हुआ हैं। उनका गाव उनकी लेखन की प्रेरणा रहा हैं। जिसे उन्होंने खूब जिया हैं। इसका

विस्तृत वर्णन उनकी आत्मकथा 'जहाँ मैं खडा हूँ ' में मिलता है। यहाँ के लोग 'राप्ती' और 'गौर्रा' नदियों में बाढ़ से पीड़ित हैं। घर-बार तबाह होने पर भी यहाँ के लोग बाढ़ का पानी उतरने के बाद मस्ती में नाचने-गाने लगते हैं। इसके बारे में मिश्र जी एक साक्षात्कार में कहते हैं ''.... गाना-बजाने में लोग इतने मस्त रहते कि खेतों तक की ज्यादा चिंता नहीं रहती थी ....''[9] इसके बाद वे नये उत्साह से खेती के काम में लग जाते थें। ऐसा गाँव मिश्र जी ने जिया है तो उनपर इस वातावरण का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही हैं। जब वे दर्जा छ: में थे तो स्कूल के पास ही कांग्रेसी आंदोलन का एक जलसा हुआ था। उसी से प्रेरित होकर उन्होंने काव्य की कुछ पंक्तियाँ लिखी थी। पड़ोसवाले गाँव के कवि पंडित गणेशदत्त मिश्र तथा मदनेश मिश्र आदि ने भी उन्हें बहुत प्रभावित तथा प्रोत्साहित किया।

रामदरश को कवि रूप में प्रसिध्द होने का विशेष मौका तब मिला जब उन्होंने 1941 में 'विशारद' के लिए बरहज में प्रवेश लिया था। बरहज, मिश्र जी के गाँव से चौबीस मील दूर था। यहाँ उन्हें बहुत संकटों का सामना करना पड़ता था। मगर उनके मन में राष्ट्रभाषा के प्रति प्रेम पैदा हुआ था। उनके बड़े भाई को भी हिन्दी साहित्य तथा भाषा के प्रति प्रेम था। वे मिश्र जी को साहित्यकार के रूप में देखना चाहते थे। बरहज में उन्हें गुरु के रूप में आचार्य सिंहासन तिवारी जी मिले। एक दिन बनारस में एक वक्ता भाषण देने आये थे। सभी लोग वक्ता का भाषण सुनने को एकत्र हो गए थे। भाषण सुनने के बाद दो-एक व्यक्तियों ने कविता पढ़ी। इससे मिश्र जी उत्साहित हुए और उन्होंने भी -

''तिमिर घनेरा हिन्द मेरा भी तजेगा अब''

नामक कविता की पंक्तियाँ पढ़ी। कविता राष्ट्रीय होने के कारण सभी लोगों से वाह-वाही मिली। उस दिन से ही वे चारो ओर कवि के रूप में विख्यात हुए। सभी लोग उन्हें 'कवि' नाम से पुकारने लगे।

1943 में 'साहित्य-रत्न' पास करने के बाद वे बरहज से बनारस आये। बनारस में उनके लिए साहित्यिक माहौल अच्छा रहा। इसलिए वे स्वयं को भाग्यशाली मानते हैं। वहाँ उन्हें हिन्दू विश्वविद्यालय के आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जैसे गुरु मिले। 1946 से 56 की अवधी बनारस में ही बीती। यह लम्बी अवधी उनके लिए 'स्वर्णकाल' साबित हुई। 1942 के 'भारत छोड़ो' आंदोलन के वक्त वे बरहज में थे। बनारस में वे जयशंकर प्रसाद, राजेंद्र नारायण शर्मा, ठाकूर प्रसाद सिंह, हजारीप्रसाद द्विवेदी, निराला

आदि साहित्यकारों के साहित्य से प्रभावित रहें। इसी कारण मिश्र जी के प्रारंभिक गीत छायावाद से प्रभावित है।

डॉ. रामदरश मिश्र जी के लेखन की शुरुआत गीतों से ही हुई हैं। समय का क्रूर यथार्थ गीतों में समाहित न होने के कारण उन्होंने काव्य लेखन शुरू किया। 1951 में उनका पहला गीत-संग्रह 'पथ के गीत' प्रकाशित हुआ। काव्य में भी समय का क्रूर यथार्थ समाहित न होने के कारण उन्होंने कहानी में लेखन शुरू किया और कहानी से उपन्यास की ओर मुड़े। इसके साथ ही उन्होंने वाङ्मय के अन्य प्रकारों में भी लेखन किया है। इसका विवेचन-विश्लेषण इसप्रकार प्रस्तुत है -

1.2.1 कविता संग्रह :-

मिश्र जी मूलत: कवि है। वे स्वयं भी यह बात स्वीकार करते हैं। उनके लेखन की शुरुआत काव्य - गीत से हुई है। उनका लेखन कार्य सन् 1945 के आसपास शुरू हुआ। सन् 1951 में उनका पहला काव्य-संग्रह 'पथ के गीत' प्रकाशित हुआ। यह गीतों का संग्रह है। उस वक्त वे जयशंकर प्रसाद के काव्य से प्रभावित हुए थे। बाद में मार्क्सवाद के मूल्यों से प्रभावित रहें। उनके साहित्य पर साहित्य के क्षेत्र में उठनेवाले वादों का प्रभाव जरुर है लेकिन वे किसी वाद से जुड़े नहीं रहे। वे सदैव साहित्यिक राजनीति से दूर रहे है। उन्हें कविता में कृत्रिमता बिल्कुल पसंद नहीं है। मिश्र जी को 'दिनकर' के काव्य की सादगी पसन्द है। वे 'निराला' के काव्य से भी प्रभावित रहे हैं। वे काव्य संप्रेषण योग्य होना महत्त्वपूर्ण समझते हैं। जिसे सामान्य-से-सामान्य आदमी भी समझ सके। जब मिश्र जी अहमदाबाद में प्राध्यापक के रूप से में नियुक्त हुए थे तब उनके घर में अनौपचारिक काव्य गोष्ठीयाँ होती थीं। अन्य कवि तथा छात्र उनके घर में ही इकट्टा होकर अपनी - अपनी कविताएँ पढ़कर दिखाते थे। तब कई छात्र 'कल्पना' या 'धर्मयुग' में छपी उनकी कविता सुनाने का आग्रह करते तो मिश्र जी चिढ़कर कविता के बारे अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते कि ''कविता का महत्त्व इस बात में नहीं है कि वह किस पत्रिका में छप गई है। अरे भाई कविता अच्छी लगी - उसने हमारे मर्म को छू लिया कि समझ लो कविता अच्छी है।''[10] कविता की भाषा में सहजता उन्हें बहुत पसन्द है। उनकी छोटी-छोटी कविताओं में समय का कटु यथार्थ है। उन्होंने काव्य के गीत, गज़ल तथा खंडकाव्य में लेखनी चलाई है। उनका 'चक्रव्यूह' खंडकाव्य अप्रकाशित रहा है। उनके काव्य का परिचय इसप्रकार दिया जा सकता है।

1.2.1.1 पथ के गीत (सन् 1951) :-

कवि रामदरश मिश्र जी का 'पथ के गीत' पहला गीत-संग्रह सन् 1951 में प्रकाशित हुआ है। मिश्र जी का रचना क्षेत्र में यह प्रथम प्रयास है। इस गीत-संग्रह की भूमिका स्वयं हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने लिखी है। उस समय प्रस्तुत गीत संग्रह बहुत ही चर्चा में रहा था। इसके कई गीतों पर छायावाद का प्रभाव है। इसमें कई लोकगीतों का भी समावेश है। इस संग्रह में मिश्र जी ने अपने निजी अनुभवों और समय के सत्य को समेटने का प्रयास किया है। काव्य के क्षेत्र में यह उनका प्रथम प्रयास होने के कारण वे कहते हैं -

"मैं आषाढ का पहला बादल
मेरी राह न बांधों
जन-जन के उर का कोलाहल पीकर मैं गाता हूँ।"[11]

अनेक विशेषताओं से परिपूर्ण यह गीत-संग्रह है। गेयता उसकी महत्त्वपूर्ण विशेषता है। व्यक्ति मन की तड़फ, छट्पट्राहट तथा पीड़ा को भी अभिव्यक्त करने का प्रयास कवि ने किया है। इस संग्रह की 'सरसों का वन' कविता में विपत्तियों में भी अपने मार्ग से विचलित हुए बिना आकाश में संचरण करनेवाले पंछियों का गीत है। 'शवसाधना' कविता में मिश्र जी प्रकृति के माध्यम से मानव-जीवन संबंधी अपने विचार प्रकट करते हैं। इसप्रकार 'पथ के गीत' एक महत्त्वपूर्ण गीत संग्रह है।

1.2.1.2 बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ (1962) :-

'बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ' मिश्र जी का दूसरा काव्य-संग्रह है। पहले और दूसरे काव्य-संग्रह में समय का बहुत अंतराल है। इस अंतराल के बीच कवि ने अनेक विचार-प्रवाहों को आत्मसात कर नयी काव्य-संभावनाओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। यह काव्य-संग्रह आज के गतिशील समाज का बोध कराता है। आज हम ऐसे समाज में जी रहे है जिसमें मूल्य स्थित नहीं है। आज हर-एक आदमी दबाव तथा आत्मसंघर्ष से अक्रांत है। उसका अस्तित्व खतरे में होने पर भी जीने को मजबूर है। इसका चित्रण इस काव्य-संग्रह के माध्यम से हुआ है। इसमें कई गीत तथा गज़ल भी संग्रहीत है। इस काव्य-संग्रह के शीर्षक से ही पता चलता है कि आज का मानवी जीवन उस बिना वारिस के बेनाम चिट्ठियों की तरह हुआ है। इस काव्य-संग्रह की 'बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ', 'धूप', 'पतझर' आदि महत्त्वपूर्ण कविताएँ हैं।

1.2.1.3 पक गई है धूप (1969) :-

'पक गई है धूप' मिश्र जी का तीसरा काव्य-संग्रह है। इसका प्रकाशन सन् 1969 में हुआ है। यह काव्य संग्रह तीन भागों में विभाजित है। (1) होने न होने, (2) गीत और गीतात्मक संवेदना, (3) मेरा आकाश आदि। इस काव्य-संग्रह की 'होने न होने के बीच' 'पताकाएँ', 'केंद्र और परिधि उर्फ छोटी बड़ी मछलियाँ', 'फिर वही लोग', 'समय देवता', 'पतझर', 'फागुनी शाम' आदि महत्त्वपूर्ण कविताएँ हैं। 'फिर वही लोग' इस संग्रह की लम्बी कविता है। इसमें कुर्सी के लिए दलबदली नेताओं पर व्यंग्य किया है। इस कविता-संग्रह के माध्यम से मिश्र जी ने सरकारी भ्रष्टाचार, अफसरशाही, राजनीतिक कुशलता, शोषण तथा गंदी महानगरीय नीति का चित्रण किया है।

1.2.1.4 कंधे पर सूरज :-

'कंधे पर सूरज' मिश्र जी का चौथा काव्य-संग्रह है। इसमें सन् 1969 से 1977 तक की कविताओं को संकलित किया गया है। आज औद्योगिकरण के कारण पूँजीपतियों का प्रभाव बढ़ रहा है। सामान्य जनता इनके शोषण से पीसती हैं। इस काव्य-संग्रह में राजनीतिज्ञों द्वारा पूँजीपतियों का समर्थन और जनसामान्य की उपेक्षा का खेद व्यक्त किया है। इसमें ग्रामीण समस्याओं के साथ पश्चिमी खोखले अंधानुकरण का भी जिक्र किया है। इसके साथ इसमें क्रांति की भावना, राजनीतिक बेताल बर्ताव आदि का भी चित्रण आया है। इस संग्रह की 'दवा की तलाश', 'साक्षात्कार', 'गठरी', 'लौट आया हूँ', 'सत्यबोध', 'गाव : चार कविताएँ' आदि महत्त्वपूर्ण कविताएँ है। इसमें मिश्र जी का कहीं-कहीं विद्रोही स्वर भी सुनाई देता है।

1.2.1.5 दिन एक नदी बन गया :-

'दिन एक नदी बन गया' छोटी-छोटी कविताओं का काव्य-संकलन है। इसका प्रकाशन 1985 में हुआ हैं। मिश्र जी की छोटी-छोटी कविताओं में एक कौंध है जिसे समझने के लिए कविताओं को ध्यान से पढ़ना आवश्यक है। इसमें मिश्र जी के परिपक्व विचार मिलते हैं। वैचारिक परिपक्वता और सामाजिक प्रतिबध्दता यह उनकी इन कविताओं की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। कन्हैया लाल नन्दन इस काव्य-संग्रह के बारे में लिखते है कि ''रामदरश की कविताएँ टूटते हुए संभ्रमों को वाणी देनेवाली कविताएँ है। ईमानदारी इतनी कि अगर वे वाणी नहीं दे पाते तो धूल से भी अपनी तुलना करके पश्चात्ताप में उतर आते हैं।''[12] इस संग्रह की 'कलम', 'राजधानी एक्सप्रेस', 'मकान', 'दिन एक नदी बन गया' आदि महत्त्वपूर्ण कविताएँ है।

1.2.1.6 मेरे प्रिय गीत :-

'मेरे प्रिय गीत' यह मिश्र के अन्य काव्य-संग्रहों से चुने हुए गीतों का संकलन है। 1951 से 1985 तक प्रकाशित सभी काव्य-संग्रहों से चुने हुए उत्कृष्ट गीत है। इन गीतों में लम्बा अंतराल होने के कारण उन्हें तीन भागों में विभक्त किया गया है। उनके किशोरावस्था में लिखे गीतों में वैचारिकता तथा भावुकता की प्रधानता रही है। इसमें चित्रात्मकता और आत्मीयता है। डॉ. फूलबदन यादव 'मेरे प्रिय गीत' के बारे में लिखते है '' 'मेरे प्रिय गीत' की प्रारंभिक चरण की रचनाओं में थोड़ेसे अंतर के साथ छायावादी प्रवृत्तियाँ-व्यक्तिपरकता, वायवीयता, प्रकृति चित्रण, रहस्यमयता और राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना खोजी जा सकती है।''[13] इस संग्रह के 'बादल घेर घेर मत बरस', 'फागुनी रात', मनाएँ क्या दिवाली हम ? आदि महत्त्वपूर्ण गीत है।

1.2.1.7 बाजार को निकले हैं लोग :-

'बाजार को निकले हैं लोग' यह गज़ल-संग्रह सन् 1986 में प्रकाशित हुआ है। गज़ल मिश्र जी की मुख्य काव्य शैली न होकर भी उन्होंने उत्कृष्ट गज़लों का लेखन किया हैं। गज़लों के विषय काल्पनिक न होकर यथार्थ जीवन से जुड़े है। आज के समाज का यथार्थ गज़लों में दिखाई देता है। आज के समाज की बाजारवादी प्रवृत्ति तथा खोखलेपन आदि का भी चित्रण इन गज़लों में दिखाई देता है। सांकेतिकता, चित्रात्मकता उनकी गज़लों की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ है। इस संग्रह में कुल 54 गज़लें संग्रहित हैं।

1.2.1.8 जुलूस कहाँ जा रहा है ? :-

इस काव्य-संग्रह की कविताएँ बहुत सहज है। पाठक उसे अनायास ही समझ सकते है। इसमें 1984 के बाद की कविताएँ संग्रहित है। इस संग्रह में भी मिश्र जी ने 'आम आदमी' की पीड़ाओं को चित्रित किया हैं। मानव जीवन में आये बदलाव, एक-दूसरे के प्रति अविश्वास, राजनीति तथा गुंडागर्दी का यथार्थ चित्रण उनकी कविताओं में मिलता है। 'दस्तक', 'औरत', 'नयी शताब्दी', 'फरवरी' आदि इस संग्रह की महत्त्वपूर्ण कविताएँ है।

1.2.1.9 आग कुछ नहीं बोलती :-

'आग कुछ नहीं बोलती' काव्य-संग्रह 1992 में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में 'आग' एक प्रतीक के रूप में लिया गया है। यह आग सभी में समायी होती है। जिस प्रकार माचिस की डिबिया में तिनके है वह घसीटा नहीं जाता तब तक वह माचिस की

डिबिया में पड़े रहते हैं। उसी प्रकार आदमी का भी स्वभाव है। जब तक उनके दिव्य-दिमाग पर चोट नहीं होती तब तक क्रांति नहीं होती। इन प्रतीकों के माध्यम से मिश्र जी आज का युगीन जटिलताओं को सामने रखने का प्रयास रहा है। 'लड़की', 'वसंत', 'पेड़', 'आग कुछ नहीं बोलती', 'कुर्ते', 'कपड़े', 'भवन' आदि इस संग्रह की महत्त्वपूर्ण कविताएँ है। सही बिम्बो के माध्यम से सही परिस्थिति का अंकन मिश्र जी की इन कविताओं की महत्त्वपूर्ण विशेषता रही है।

1.2.1.10 शब्द-सेतु :-

मिश्र जी का 'शब्द-सेतु' यह काव्य-संग्रह सन् 1994 में प्रकाशित हुआ है। इसमें मिश्र जी की 53 कविताएँ संकलित हैं। इसमें कई गीत तथा गज़लों का भी समावेश किया है। इस संग्रह में कुछ लम्बी तो कुछ बहुत छोटी कविताएँ है। इस काव्य संग्रह के प्रारंभ में ''मैं और मेरी कविता'' के अंतर्गत उन्होंने उनके साहित्य के सन्दर्भ में एक लम्बी भूमिका दी है। साहित्य के क्षेत्र में फैली राजनीति का भी जिक्र इसमें आया है। यह मिश्र के महत्त्वपूर्ण काव्य-संग्रहों में से एक है।

1.2.1.11 बारिश में भीगते बच्चे :-

इस संग्रह का प्रकाशन सन् 1996 में हुआ है। यह मिश्र जी का गज़ल-संग्रह है। इसमें संवेदनाओं की बनावट, प्रकृति और लोकजीवन के प्रति गहरा ममत्व, राजनीतिक दाँवपेच, शहरी रहन-सहन, स्वार्थपरकता और पूँजीवादी उत्पीड़न के विरूध्द गहरा आक्रोश मिलता है।

इसके साथ ही 'हँसी ओठ परआँखे नम हैं'' गज़ल संग्रह (सन् 1997), 'ऐसे में जब कभी' (सन् 1999), 'मेरे गीत' (सन् 2003), 'आम के पत्ते' (सन् 2004), तू-ही-बता-ए-जिंदगी' गज़ल संग्रह (सन् 2005) आदि काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि मिश्र जी के गीतों, कविताओं तथा गज़लों के विषय बहुत व्यापक रहे है। उनके काव्य में प्रकृति-चित्रण, नारी सौन्दर्य-चित्रण, सामाजिक तथा राष्ट्रीय चेतना, आज की खोखली राजनीति, मातृभूमि के प्रति प्रेम आदि बातों संबंधी का यथार्थ चित्रण मिलता है। उनकी काव्य रचनाओं के माध्यम से उनकी प्रगतिशीलता सहज स्पष्ट होती है। अपनी इन रचनाओं के माध्यम से उन्होंने काव्य-क्षेत्र में मौलिकता सिद्ध की है।

1.2.2 कहानी संग्रह :-

रामदरश मिश्र जी ने कविता के बाद कहानी में लेखन शुरू किया। आज लोग कविता की अपेक्षा कहानी पढ़ने में ज्यादा रुचि लेते है। कहानी मनोरंजन का सक्षम माध्यम है। छोटी-छोटी कहानियों के माध्यम से मनोरंजन तथा शिक्षा दोनों उद्देश्य सफल होते हैं। कहानी की ओर मुड़ने के विचार व्यक्त करते हुए दिनेश चमोला से हुई बातचीत में मिश्र जी कहते है, "कविता के माध्यम से आज के जटिल यथार्थ के सभी आयामों को समान प्रभुविष्णूता के साथ व्यक्त नहीं किया जा सकता, अत: वे यथार्थ के स्वरूप के अनुसार कभी कथा-साहित्य का सहारा लेते हैं, कभी रिपोर्ताज व अन्य विधाओं का।"[14]

छठ्वे दशक में नई कहानी का बोलबाला रहा था। नई कहानी के नाम पर नगरीय कहानी लिखी जा रही थी। नगरीय कहानियों में बार-बार स्त्री-पुरुष के संबंधों को चित्रित किया जा रहा था। इसी वक्त कहानी की नयी दिशा देने कई कहानीकार आगे आये जिन्होंने गाँव को भी अपनी कलम से पकड़ा। सिर्फ स्त्री-पुरुष संबंधों को ही नहीं उनकी पीड़ा, संघर्ष को अपनी कहानी में चित्रित करने की कोशिश की। इस वक्त जिन कथाकारों ने ग्रामीण समस्याओं को लेकर कहानियाँ लिखी उन्हें 'आँचलिक कहानीकार' कहा गया। जिन्होंने नगरों के जीवन को लेकर कहानियाँ लिखी उन्हें 'नागर कहानीकार' कहा गया। इस वक्त कहानीकार समाज के अनुभवों के अनुसार कहानियाँ लिख रहे थे। इसी काल में उभरा नाम डॉ. रामदरश मिश्र जी है। तब से आज तक उनका कहानी लेखन अखंड रूप से शुरू है। उनका पहला कहानी-संग्रह 'खाली घर' 1968 में प्रकाशित हुआ है। उनकी कहानियों में सामाजिक यर्थाथ परिलक्षित होता है। उनके कहानी-संग्रहों का संक्षिप्त परिचय इसप्रकार -

रचनाकाल की दृष्टि से मिश्र जी की कहानियों को कई दशकों में विभाजित किया जा सकता है। इन दशकों में अलग-अलग विषयों तथा समस्याओं को लेकर उन्होंने कहानियाँ लिखी है। दशकों के अनुसार उनकी अलग-अलग विशेषताएँ है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से उनकी कहानियों को इसप्रकार विभाजित किया जा सकता है। -

(1) सन् 1960 के पूर्व की कहानियाँ

(2) साठोत्तरी कहानियाँ

साठोत्तरी कहानियों को फिर पाँच विभागों में विभाजित किया जा सकता हैं, क्योंकि सन् 1960 के बाद का हिंदी साहित्य अपनी करवटे निरंतर बदलता रहा है :-

(1) सातवें दशक की कहानियाँ

(2) आठवें दशक की कहानियाँ

(3) नौवें दशक की कहानियाँ

(4) अन्तिम दशक की कहानियाँ

(5) इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारंभ की कहानियाँ

1.2.2.1 सन् 1960 के पूर्व की कहानियाँ :-

मिश्र जी की सन् 1960 के पूर्व प्रकाशित कहानियों में आजादी के बाद आम आदमी का मोहभंग, आर्थिक कठिनाईयाँ, बेकारी, आजादी के बाद तिरस्कृत ग्रामजीवन, टूटन, क्षोभ, आक्रोश तथा सामाजिक परिवेश का यथार्थ चित्रण मिलता है। सन् 1960 के पूर्व मिश्र जी की नौ कहानियाँ प्रकाशित हुई थी। उनमें 'मनोज जी' (सन् 1954), 'अभिशक्त राग' (सन् 1955), 'बेला मर गई' (सन् 1960), 'खाली घर' (सन् 1960) आदि कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से बहुत चर्चित रही।

1.2.2.2 साठोत्तरी कहानियाँ :-

साठोत्तरी कहानियों में सन् 1960 के बाद की कहानियाँ आती है। इन कहानियों का दशकानुसार वर्गीकरण तथा विशेषताएँ इसप्रकार है -

1.2.2.2.1 सातवें दशक की कहानियाँ :-

इस दशक की अधिकतर कहानियाँ 'धर्मयुग' तथा 'सारिका' पत्रिका में प्रकाशित हुई है। इनमें से प्रमुख कहानियाँ इसप्रकार है - 'माँ : एक बिखरा हुआ दिन' (सन् 1962), 'एक इन्टरव्यू उर्फ कहानी तीन शतुरमुरगों की' (सन् 1963), 'एक औरत एक जिन्दगी' (सन् 1965), 'मिसफिट' (सन् 1969), और 'जमीन' (सन् 1970) इस प्रकार की कहानियाँ बहुत चर्चित रही हैं। इस दशक में सन् 1968 में 'खण्डहर की आवाज' कहानी प्रकाशित हुई जो 'लम्बी कहानी' का संकेत देती है।

सातवें दशक के कहानियों की कथावस्तु में विषय, शैली तथा शिल्प की विविधता दिखाई देती हैं। ग्रामीण एवं महानगरीय प्रातिनिधिक पात्रों द्वारा उनकी पीड़ा तथा विविध समस्याओं को चित्रित किया गया हैं। इन कहानियों में सामाजिक विषमता, अंधविश्वास, टूटते बंधन, नारी के संस्कार तथा ममत्व, अपाहिजों की मानसिकता, गाँव के सरपंच तथा पुलिसों के अत्याचार, छुआछूत, भ्रष्टाचार, उत्सवों के प्रति बदलती मानसिकता आदि विषयों को लेकर कहानियों लिखी हैं।

1.2.2.2.2 आठवें दशक की कहानियाँ :-

इस दशक में मिश्र जी के दो कहानी - संग्रह प्रकाशित हुए हैं। सन् 1974 में 'एक वह' तथा सन् 1979 में 'दिनचर्या', कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए। इन कहानी-संग्रहों की 'एक वह', 'कर्ज', 'मूर्दा मैदान' आदि कहानियाँ बहु-चर्चित रही। इसी दौरे में 'एक अधूरी कहानी' और 'आखिरी चिट्ठी' आदि अपेक्षाकृत जटिल कथावस्तु की लम्बी कहानियाँ लिखी गयी। इस दौर की अधिकांश कहानियाँ 'सारिका' पत्रिका में प्रकाशित हुई है। इस युग की अधिकतर कहानियाँ व्यंग्य-प्रधान रही है। इस युग में राजनीति ने समाज-जीवन को बुरी तरह प्रभावित किया है। इस दशक की कहानियों में राजनेताओं की नारेबाजी तथा सामान्य जनता की दर्दनाक हालत का यथार्थ चित्रण मिलता है।

1.2.2.2.3 नौवें दशक की कहानियाँ :-

नौवें दशक में मिश्र जी के चार कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए है। सन् 1982 में 'सर्पदंश' और 'बसन्त का एक दिन', 1984 में 'इकसठ कहानियाँ' तथा सन् 1990 में 'मेरी प्रिय कहानियाँ' आदि कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। इस कहानी संग्रह की 'इज्जत', 'पानी', 'लड़की', आदि कहानियाँ बहुत चर्चित रही हैं। इस दशक तक आते-आते मिश्र जी की समाज के प्रति देखने की दृष्टि अधिक सज़ग हुई है। इस युग में मिश्र जी एक सफल कहानीकार के रूप में मशहूर हुए। इन कहानियों के माध्यम से मिश्र जी ने वर्ग संघर्ष, सन्तानहीन गरीब नारी की दशा, तथा धर्म का खोखलापन आदि विषयों पर प्रकाश डाला हैं।

1.2.2.2.4 अन्तिम दशक की कहानियाँ :-

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में मिश्र जी के सात कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। सन् 1992 में 'अपने लिए', 'चर्चित कहानियाँ', 1995 में 'श्रेष्ठ आँचलिक कहानियाँ', 1996 में 'आज का दिन भी', 1998 में 'एक कहानी लगातार' और 'फिर कब आयेंगे' तथा 1999 में 'अकेला मकान' आदि कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। इन कहानी-संग्रहों के माध्यम से आर्थिक प्रश्नों के कारण उत्पन्न होनेवाली पीड़ा शोषण, भूखमरी, अमीरों के शौक, परंपरा, बढ़ती ठगवृत्ति, आतंकवाद, फ्री सेक्स, तथा देहातों की विविध समस्याओं का चित्रण हुआ हैं।

1.2.2.2.5 इक्कीसवीं शताब्दी के आरंभ की कहानियाँ :-

इक्कीसवीं शताब्दी के आरंभिक दशक में मिश्र जी के पाँच कहानी-संग्रह

प्रकाशित हुए हैं। सन् 2002 में 'विदुषक', 'दिन के साथ', तथा 'मेरी तेरह कहानियाँ', सन् 2004 में 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' तथा सन् 2006 में 'विरासत' आदि कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ हैं। इन कहानी-संग्रहों में भी ग्रामीण तथा महानगरीय विविध समस्याओं का चित्रण हुआ है। मिश्र जी के समग्र कहानियों का विवेचन करते हुए सुरेन्द्र तिवारी कहते हैं कि ''रामदरश जी की समग्र कहानियों के बीच से अगर एक बार गुजरा जाये तो दो बाते बहुत स्पष्ट हो उठती है, एक तो यह कि उनकी कहानियों में समाज के शोषित, उपेक्षित वर्ग के जीवन का यथार्थ अधिक व्यक्त हुआ है और दूसरा यह कि उनकी कहानियों में एक पीड़ा-बोध बराबर बना रहता है।''[15]

इस प्रकार मिश्र जी के कहानी-संसार को देखकर यह परिलक्षित होता है कि उनका अनुभव का दायरा बहुत विस्तृत हैं। इसमें गाँवों से लेकर महानगर तक की विविध समस्याओं तथा जीवनानुभवों को समेटा हैं। इसी कारण मिश्र जी एक सफल कहानीकार है।

1.2.3 उपन्यास :-

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासकारों में डॉ. रामदरश मिश्र जी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज तक उनके तेरह उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। इनमें से चार महाकाव्यत्मक उपन्यास हैं। उनका पहला उपन्यास 'पानी के प्राचीर' सन् 1961 में प्रकाशित हुआ है। इसे 1958 से 1961 के बीच दो साल में लिखा गया है। तब वे गुजरात के बड़ौदा में थें। इसे लिखने की प्रेरणा उन्हें फणीश्वरनाथ 'रेणू' के 'मैला आँचल' उपन्यास से मिली। मिश्र जी का 'पानी के प्राचीर' उपन्यास आँचलिक है। उनके उस उपन्यास लेखन की प्रेरणा के बारे में प्रकाश मनु से हुई बातचीत में वे कहते हैं - ''शायद इसलिए कि 'मैला आँचल' में जीवन था -वह छल-छल करता जीवन जिसका साक्षात्कार मैंने भी किया था। गाँवों के दुख-दर्द के अलावा वहां के चेहरे और उनकी भीतरी खूबसूरती। .... मुझे लगा, ऐसा तो मैं भी लिख सकता हूँ। अपने गांव के बारे में एक ऐसा उपन्यास क्यों न लिखू जिसमें जो देखा-सुना हुआ है, अनुभव का हिस्सा बन चुका है - वह भरपूर आए। और तब 'पानी के प्राचीर' लिखा गया।''[16] मिश्र जी के उपन्यासों का परिचयात्मक विवेचन इसप्रकार है -

1.2.3.1 पानी के प्राचीर :-

मिश्र जी का 1961 में प्रकाशित यह प्रथम आँचलिक उपन्यास है। इसका कथानक उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के कछार अंचल का है। जो 'राप्ती' और 'गौरी'

नदियों से घीरा प्रदेश है। इस उपन्यास के बारे में डॉ. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर जी लिखते है कि ''लेखक उपन्यास में पाण्डेपुरवा गाँव की व्यथा बताते हुए अंचलवासियों के संघर्षशील जीवन को रू-ब-रू प्रस्तुत करते हैं। यहाँ के लोग परिश्रम तो करते है लेकिन उनका परिश्रम बाढ़, गाँव का मुखिया, जमींदार या दरोगा आदि खा जाते हैं। फिर भी उनके मन में उम्मीद है जो कभी साथ नहीं छोड़ती।''[17] इसप्रकार आशावाद पर लिखा 'पानी के प्राचीर' एक सफल महाकाव्यात्मक उपन्यास है।

1.2.3.2 जल टूटता हुआ :-

यह मिश्र जी का सन् 1969 में प्रकाशित यह दूसरा उपन्यास है। इसमें तिवारीपुर गाँव की कहानी को लेखक ने चित्रित किया है। इस उपन्यास की कहानी पूर्वी उत्तर प्रदेश की हैं। आज़ादी के तुरन्त बाद के वर्षों में देहातों का यथार्थ समझाने में यह उपन्यास महत्त्वपूर्ण सहयोग देता है। यह तो स्वातत्र्योत्तर जीवन का महाकाव्य है। इसमें भारतीय समाज-जीवन की पीड़ा का जीवन्त चित्रण मिलता है। आँचलिक उपन्यासों की श्रेणी में 'जल टूटता हुआ' का अलग महत्त्व रहा है।

1.2.3.3 बीच का समय :-

सन् 1970 में प्रकाशित यह मिश्र जी का 'लघु उपन्यास' है। यह रोमांटिक अंदाज का व्यक्तिवादिता से सर्वथा मुक्त उपन्यास है। इसमें 'शील' और 'रीता' के पारस्पारिक सहजाकर्षण की कहानी है। दोनों में गुरु-शिष्या का नाता है। 'शील' गुजरात शिक्षण संस्था में अध्यापक है जिसका बचपन उत्तर प्रदेश में बीता है। शील अनमेल विवाह होने कारण उनकी कोई संतान नहीं है। इसी कारण उनका मन गृहस्थी में नहीं जुड़ता है। उनका मन उनकी शिष्या 'रीता' के साथ जुड़ जाता है। दोनों में प्रेम-संबंध स्थापित होते है। दोनों भिन्न प्रदेश के होने के कारण प्रेम-सम्बन्धी भिन्न-भिन्न मान्यताएँ सामने आती है। इसी प्रेम-कहानी के साथ ही गुजरात के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक जीवन का चित्रण भी इस उपन्यास में आया हैं।

1.2.3.4 सूखता हुआ तालाब :-

यह मिश्र जी का सन् 1972 में प्रकाशित चौथा उपन्यास है। इसमें लेखक ने समकालीन ग्राम-जीवन के बदलते भाव-बोध तथा रिश्तों में आये बदलाव आदि बातों का चित्रण इस उपन्यास में प्रस्तुत किया हैं। इस उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार ने भ्रष्ट राजनीति पदलोभी प्रवृत्ति, समाज में फैली अनैतिक स्थितियाँ, सामाजिक तथा नैतिक

मूल्यों का विघटन आदि चित्रण किया है। आज के भौतिकवादी युग का प्रभाव ग्रामीण जीवन पर भी स्पष्ट परिलक्षित होता है। इसके बारे में डॉ. ज्ञान चन्द गुप्त कहते हैं कि ''पहले गाँव के एक घर की बेटी सबकी बेटी होती थी और इज्जत -आबरू की सब कद्र करते थे, लेकिन आज वहाँ बहुत कुछ परिवर्तित है। व्यक्ति आज गाँव में भी अकेला अनुभव करने लगा है।''[18] इस प्रकार मिश्र जी के 'सूखता हुआ तालाब' में मूल्य बोध के कारण आयी बदलते मानसिकता का चित्रण प्राप्त होता है।

1.2.3.5 अपने लोग :-

मिश्र जी के महाकाव्यात्मक उपन्यासों की श्रेणी में 'अपने लोग' यह तीसरा उपन्यास है। इसमें आधुनिक भारतीय सामाजिक जीवन का वास्तववादी चित्रण किया है। इसका प्रकाशन सन् 1976 में हुआ है। 'अपने लोग' यह एक व्यंग्यात्मक शीर्षक है। इस उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार कहते है कि जिसे हम अपना मानते हैं वे कभी अपने नहीं होते। आजादी के बाद फैली आराजकता का भी चित्रण यह उपन्यास करता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि परिस्थितिओं का यथार्थ ठोस अनुभवों और सक्रियताओं के साथ निर्माण हुआ है।

1.2.3.6 रात का सफर :-

'रात का सफर' उपन्यास का प्रकाशन सन् 1976 में हुआ हैं। इसमें स्त्री जीवन की यातना और विद्रोह की कथा है। इस उपन्यास में 'ऋतु' दिल्ली के मेजिस्ट्रेट की लड़की होकर भी उन्हें स्त्री जीवन की व्यथा भुगतनी पड़ती है। उसका परिवार पढ़ा लिखा होकर भी उनपर अन्याय-अत्याचार करता है। पति छ वर्षों में एक बार भी अपने पत्नी को सुख नहीं देता। उसे सिर्फ यातना देता है। वह नर्स 'श्यामा' से आकृष्ट रहता है। इन सारी बातों को परिचित होकर भी ससुर बेटा 'दिनेश' की शादी दहेज के लालच में मेजिस्ट्रेट की लड़की 'ऋतु' से करते है। ऋतु स्वभाव से सुशील है। वह छ वर्ष संघर्ष में काटती है। अंतत: अपनी परिस्थिति से विद्रोह करती है। इस प्रकार समाज में स्त्रियों पर होनेवाले अन्याय-अत्याचार का सही चित्रण इस उपन्यास में हुआ हैं। इस उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार कहना चाहते है कि आज हम आधुनिक होने का दावा तो करते हैं पर हम सिर्फ शिक्षा से आधुनिक हुए है विचारों से अप्रगत ही है।

1.2.3.7 आकाश की छत :-

यह मिश्र जी का सातवाँ 'लघु उपन्यास' है। यह लघु उपन्यास है। इसमें

दिल्ली महानगर में रहनेवाले बाढ़ग्रस्त नायक 'यश' संबंधी प्रतीकात्मक कथानक है। बाढ़ के दिनों आकाश ही छत बनती है। जब यमुना को बाढ़ आती है तो यश का मकान पानी से घीरता है। इससे बचने के लिए वह छत पर जा बैठता है। बैठे-बैठे सोचने लगता है तो उन्हें गजपुर कस्बे तथा उनके परिवार की याद आती है। और यहाँ से इस उपन्यास का कथानक गाँव की ओर मुड़ता है। इस उपन्यास की महत्त्वपूर्ण विशेषता है कि महानगर से शुरू होनेवाला कथानक फिर ग्रामीण जीवन की ओर मुड़ता है।

1.2.3.8 आदिम राग :-

यह उपन्यास सन् 1970 में 'बीच का समय' नाम से प्रकाशित हुआ था लेकिन मिश्र जी के इसके पूर्व दो आँचलिक उपन्यास प्रकाशित होने के कारण यह बहुत चर्चा में नहीं रहा। इसी कारण मिश्र जी ने 1982 में उसे फिर 'आदिम राग' नाम से प्रकाशित किया हैं।

1.2.3.9 बिना दरवाजे का मकान :-

'बिना दरवाजे का मकान' मिश्र जी का सन् 1984 में प्रकाशित नायिका-प्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास के माध्यम से मिश्र जी ने गाँव से महानगर में बसे 'दीपा' और 'बहादूर' के माध्यम से महानगरीय जीवन की नरकीय कथा कही है। पति बहादूर अपाहिज होने के कारण 'दीपा'को एक मजदूरनी का काम करना पड़ता है। इस दरम्यान 'दीपा' के जीवन में आये विविध अनुभवों को इस उपन्यास में चित्रित किया है। इसे साथ ही गाँव तथा शहरों में सेक्स, असुरक्षा, शोषण आदि समस्याओं का चित्रण भी इस उपन्यास में मिलता हैं। काम से वापस आते समय 'दीपा' को गुण्डों का डर है। उसे अपने सुरक्षा के बारे में चिंता है। 'बिना दरवाजे का मकान' यह आज के असुरक्षित मानवी जीवन का प्रतीक है।

1.2.3.10 दूसरा घर :-

'दूसरा घर' मिश्र जी का महाकाव्यात्मक उपन्यास है। इसका प्रकाशन 1986 में हुआ है। यह ज्यादातर गुजरात के जीवनानुभवों पर आधारित लिखा उपन्यास है। मिश्र जी का गुजरात राज्य के साथ लगाव रहा है। वे गुजरात को अपना दूसरा घर मानते हैं। यह परिवेश प्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास की निश्चित कथा नहीं है। इसमें कथा-उपकथाओं का मिश्रण हैं। यह अर्धांचलिक उपन्यास है। इस उपन्यास में शहर की तुलना में जादा ग्रामीण जीवन का चित्रण आया है। इसमें गुजरात में कटे अध्यापकीय जीवन की कहानी है।

1.2.3.11 थकी हुई सुबह :-

'थकी हुई सुबह' सन् 1994 में प्रकाशित लघु उपन्यास है। इस दसवें उपन्यास में नारी जीवन के यथार्थ की सघन गूँज सुनने को मिलती है। इस उपन्यास के माध्यम से शिक्षा और स्वावलंबन के साथ-साथ नारी-अस्मिता की पहचान बनाना मिश्र जी का मुख्य उद्देश्य रहा हैं। इस उपन्यास के बारे डॉ. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर जी लिखते है कि '' 'थकी हुई सुबह' में देहात में पली लक्ष्मी की कहानी है जो नारी-जीवन का महाकाव्य-सा लगता है।''[19] इस उपन्यास में बदलते समाज-जीवन का चित्र प्रस्तुत हुआ है। लघु उपन्यास होते हुए भी नारी जीवन का बड़ा 'कैनवास' लेखक ने प्रस्तुत किया है।

1.2.3.12 बीस बरस :-

'बीस बरस' रामदरश मिश्र जी का सन् 1996 में प्रकाशित उपन्यास है। इस उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार ने बीस बरस पहले की तुलना में आज के गाँव में आये बदलाव का चित्रण किया है। मिश्र जी ने नायक दामोदर के माध्यम से इसे चित्रित किया है। नायक 'दामोदर' बीस साल बाद शहर से गाँव वापस आता है तो उन्हें अपना गाँव बहुत परिवर्तित दिखाई देता है। इसमें कई परिवर्तन गाँव को प्रगति की ओर ले गये तो कई पतन की ओर। यह उपन्यास रिपोर्ताज शैली में लिखा गया है।

1.2.3.13 परिवार :-

'परिवार' मिश्र जी का सन् 2006 में प्रकाशित उपन्यास है। 'परिवार' उपन्यास के माध्यम से आज टूटते रिश्तों का चित्रण किया है। इस उपन्यास का नायक 'काशीनाथ' गोरखपुर से आकर दिल्ली में बसता है। वह दिल्ली में रेल के दफ्तर में क्लर्क की नोकरी करता है। यह उपन्यास रिश्तों में आये बदलाव को व्यक्त करता है। इस उपन्यास के बारे में परेश सिन्हा लिखते है, ''आज जब 'हम दो, हमारे दो तक परिवार सीमित होता जा रहा है, परिवार खुला होना और उसमें स्वजन-परिजनों का समावेश अतीत का वह मानवीय धरोहर है जो भौतिकता से दूर, मनुष्य बने रहने को उत्प्रेरित करता है। कहीं पढ़ा था, परिवार का जिस तेजी से अर्थसंकोच हो रहा है वह समय आयेगा जब लोग चाचा, मामा, फूफा, मौसी, चचेरे-ममेरे, भाई-भतीजे, ताऊ आदि संबंध सूचक शब्दों के अर्थ जानने के लिए शब्दकोश का सहारा लेंगे।''[20] उपन्यास का शीर्षक 'परिवार' सार्थक है। मिश्र जी के उपन्यासों मे यह उपन्यास महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए एक अलग व्यवस्था की पहचान कराता है।

BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY

मिश्र के आरंभिक उपन्यास आँचलिक रहे हैं तो बाद के उपन्यास गाँव-नगर-महानगर से गुजरते हुए भारतीय समाज जीवन के प्रतिनिधित्व को व्यक्त करते है।

1.2.4 आलोचना :-

मिश्र जी ऐसे रचनाकार है जिन्होंने साहित्य के अन्य विधाओं के साथ आलोचनात्मक साहित्य भी लिखा है। उनके कई आलोचनात्मक ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास तथा गद्य साहित्य के अन्य विधाओं पर भी प्रामाणिक आलोचनात्मक ग्रंथ लिखें है। वैसे तो उनकी आलोचनात्मक ग्रंथ लिखने में रुचि कम ही रही है। इसका जिक्र करते हुए प्रकाश मनु से हुई बातचीत में वे कहते है, " .... हां, आलोचना का जहां तक सवाल है, मैं उसमें सहज शुरू से ही नहीं रहा। मैंने आपध्दर्म की तरह ही उसे निभाया है। यानी आलोचना मैंने बहुत मजबूरी में लिखी, भीतर से बहुत मन नहीं होता .... और तो और, आलोचना ग्रंथ पढ़ने में भी मेरी रुचि कुछ कम है - क्रिएटिव चीजें कविता, कहानी, उपन्यास, ललित निबंध, यात्रावृत्त यही पढ़ना मुझे ज्यादा पसन्द है ...।"[21] उनका आलोचनात्मक साहित्य 1960 से लेकर 2000 इ. सन् के दरम्यान प्रकाशित हुआ है। उपन्यास, कहानी, कविता तथा साहित्य के विविध नए रूपों पर उनके आलोचनात्मक ग्रंथोंने प्रकाश डाला हैं। उनके कुल 12 आलोचनात्मक ग्रंथ अब तक प्रकाशित हुए हैं।

1.2.5 ललित निबंध संग्रह :-

मिश्र जी के आज तक चार ललित निबंध संग्रह प्रकाशित हुए हैं -

1.2.5.1 कितने बजे हैं ?

यह मिश्र का पहला ललित - निबन्ध संग्रह सन् 1982 में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह का पहला निबंध 'जहाँ मैं खड़ा हूँ' में बचपन का अभावग्रस्त जीवन, मस्ती का जीवन जीने का रहस्य, माता-पिता, भाई का ऋण तथा संस्कृति को चित्रित किया हैं। 'जहाँ मैं खड़ा हूँ' नामक उनकी आत्मकथा की पुस्तिका भी निकली हैं। 'होरी के हीरो', 'कितने बजे हैं ?' 'शोर मत करो आदमी सो रहे हैं', 'तुम्हारी माँ कहाँ है', 'नगर जहाँ सपने टूटते', 'एक यात्रा प्रकृति के बीच प्रकृति के साथ', 'सर्जना ही बड़ा सत्य है' आदि महत्त्वपूर्ण निबन्ध इसमें संग्रहित हैं। उनके निबन्धों में शिक्षा तथा व्यंग्य की झलक दिखाई देती है। इन निबन्धों के माध्यम से मिश्र जी ने व्यक्तिगत और सांस्कृतिक अनुभव व्यक्त किए हैं।

1.2.5.2 बबूल और कैक्टस् :-

यह मिश्र जी का दूसरा ललित निबन्ध संग्रह सन् 1997 में प्रकाशित हुआ है। इस निबंध संग्रह की व्यंग्य-मुद्रा निबंधकार के दर्द को प्रकट करती है। इस निबंध के माध्यम से निबंधकार कहते हैं कि ज्यादातर लोग कैक्टस के पक्षधर होते है लेकिन मैं स्वयं बबूल का पक्षधर हूँ। इस संग्रह में पंडित हजारीप्रसाद द्विवेदी तथा पंडित विद्यानिवास मिश्र आदि के व्यक्तित्व और कृतित्व पर भी निबन्ध है। अन्य निबन्धों में 'कल फिर आऊँगा' यह दिल्ली के पार्क संबंधी निबंध है। दिल्ली के एक छोटेसे पार्क में मिश्र टहलने के लिए जाते है और वहाँ के मानवी चेहरों की व्यथाओं को अंकित करते है।

इसके साथही 'घर परिवेश' यह सन् 2003 मे प्रकाशित निबन्ध संग्रह है। तो सन् 2006 में छोटे-छोटे सुख ' निबन्ध संग्रह प्रकाशित हुआ है। मिश्र जी के अब तक चार महत्त्वपूर्ण निबन्ध संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

1.2.6 यात्रावर्णन :-

मिश्र जी के जीवन में देश-विदेश घुमने के बहुत सारे मौके प्राप्त हुए हैं। घुमक्कड़ वृत्ति का सुंदर वर्णन उनके यात्रा वर्णन में आया है। वहाँ हे लोग, संस्कृति, रहन-सहन, प्रकृति सौंदर्य आदि का सूक्ष्म वर्णन उनके यात्रा-वर्णन में मिलता है। उनके यात्रा वर्णन पर तीन ग्रंथ प्रकाशित हैं।

1.2.6.1 तना हुआ इन्द्रधनुष्य :-

सन् 1989 में प्रकाशित मिश्र जी की यात्रा वर्णन पर लिखी यह पहली किताब है। इसमें उत्तर कोरिया में की उनकी यात्रा का वर्णन है। इसी यात्रा दौरान उन्होंने कम्युनिस्ट चीन और रूस के कई शहरों को देखकर वहाँ का इतिहास और परिवर्तित स्थिति की पहचान दी है। 'तना हुआ इन्द्रधनुष्य' यह काव्यात्मक शीर्षक है। इसमें उत्तर कोरिया के जन-जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला हैं।

1.2.6.2 भोर का सपना :-

इसका प्रकाशन सन् 1993 में हुआ है। यह यात्रा वर्णन दक्षिण कोरिया में की यात्रा पर लिखा हैं। इस यात्रा के लिए मिश्र जी के श्रद्धावान शिष्य ने उन्हें आमंत्रित किया था। 15 दिनों की इस यात्रा में मिश्र जी की पत्नी 'सरस्वती' जी भी उनके साथ थी। इस यात्रा वर्णन में दक्षिण कोरिया के समाज-जीवन की जीवन्त धड़कन, संस्कृति और प्रकृति के विराट रूप का मनोहर चित्रण मिलता हैं।

1.2.6.3 पड़ोस की खुशबू :-

सन् 1999 में प्रकाशित मिश्र जी की यात्रा वर्णन पर लिखी तीसरी किताब है। इसे मिश्र जी ने दो भागों में विभाजित किया हैं। एक भाग यात्राओं के संस्मरण में विदेशी यात्राओं पर तो दूसरा भाग व्यक्ति के संस्मरणों का है। 'घर से घर तक' मिश्र जी की लन्दन यात्रा पर आधारित यात्रा वर्णन है। 'पड़ोस की खुशबू' नेपाल यात्रा पर आधारित वर्णन है। इसके साथही 'दखिन पवन बह धीरे', 'फिर अहमदाबाद', 'किससे मिलने आए हो' आदि यात्रा वर्णन पठनीय है। इसी माध्यम से यात्रा स्थलों का परिचय सांस्कृतिक परम्परा, रीति-नीति, भौगोलकि छबियाँ प्रकृति के विविध रूपों तथा नये-नये जन-जीवन का परिचय इस निबंध संग्रह में मिलता है।

1.2.7 आत्मकथा :-

किसी भी महान व्यक्तियों की आत्मकथा महत्त्वपूर्ण दस्तावेज होती है। जिससे हम उनके व्यक्तित्व गुणों से परिचित होते हैं। इससे हमें उनके निजी जीवन का परिचय मिलता है। जिससे हम प्रभावित भी होते हैं, और जीवन में महान प्रेरणा भी प्राप्त करते हैं। डॉ. मिश्र जी ने भी आत्मकथा भी लिखी है। उनकी आज तक आत्मकथा पर दो किताबें प्रकाशित हुई हैं।

'सहचर है समय' सन् 1991 में प्रकाशित मिश्र जी की आत्मकथा पर आधारित पहली किताब है। इस आत्मकथा को मिश्र जी ने पाँच खण्डों मे विभाजित किया हैं। (1) 'जहाँ मैं खड़ा हूँ' (2) 'रोशनी की पगडंडियाँ' (3) 'टूटते बनते दिन' (4) 'उत्तर पथ' और (5) 'फूरसत के दिन'। मीरा शर्मा इस आत्मकथा के बारे में लिखती हैं कि, ''हिन्दी आत्मकथा साहित्य के इतिहास को देखने से पता चलता है कि अधिक तर महत्त्वपूर्ण कृतियाँ साहित्यकारों द्वारा लिखी गयी है। ये लेखक राष्ट्रीय, सामाजिक आंदोलनों से जुड़े रहे हैं। अत: इनकी रचनाओं से केवल इनकी जीवन-यात्रा का परिचय नहीं मिलता बल्की तत्कालीन परिवेश भी उभरकर सामने आता है। इन आत्मकथाओं का उल्लेखनीय पक्ष यह भी हैं कि इनसे इन रचनाकारों की रचना प्रक्रिया और साहित्यिक प्रतिमानों से सीधा साक्षात्कार होता है।[22] मिश्र जी की आत्मकथा में भी ये सारे गुण मिलते हैं।

इन पाँच खण्डों के माध्यम से मिश्र जी ने जीवन के विविध पडावों को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। 'जहाँ मैं खड़ा हूँ' खण्ड में जन्म से लेकर प्राथमिक शिक्षा तक

BARR. ...HARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

का वर्णन है। द्वितीय खण्ड 'रोशनी की पगडंडियाँ' में प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करने से लेकर बनारस विश्वविद्यालय में एम.ए. की शिक्षा ग्रहण करने तक के समय का वर्णन है। 'टूटते बनते दिन' तृतीय खण्ड में पीएच्.डी. से लेकर स्थायी नौकरी की तलाश तक तथा गुजरात में अध्यापक की नौकरी करने तक का वर्णन है। 'उत्तर पथ' चतुर्थ खण्ड में स्थायी नौकरी से अवकाश प्राप्ति तक के दिन तथा वृद्धावस्था का वर्णन है। 'फुरसत के दिन' इस पंचम खण्ड में सन् 2000 तक के जीवन के उतार चढ़ाव, मान-सम्मान का वर्णन मिलता हैं।

1.2.8 संस्मरण :-

संस्मरण स्मृतियों के आधार पर लिखा जाता है। जब किसी व्यक्ति या वस्तु की याद बार-बार सताती है तो उन्हें संस्मरण के माध्यम से साहित्य में उतार दिया जाता है। मिश्र जी ने भी अपने जीवन में आये घनिष्ठ व्यक्तियों के सम्बन्ध में संस्मरण लिखें हैं। उनकी तीन संस्मरणात्मक रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

'स्मृतियों के छन्द' यह सन् 1995 में प्रकाशित पहली संस्मरणात्मक रचना है। इसमें मिश्र जी बचपन में जिन लोगों से प्रभावित रहें उनका तथा कई विद्वानों के व्यक्तित्व का अंश इसमें प्रस्तुत किया है। यह कुल चौदह संस्मरणों का संग्रह है। इसमें से चार संस्मरणों में गाँव से बनारस तक यात्रा काल में शिक्षा गुरुओं को याद किया है। बाकी दस संस्मरण दिग्गज साहित्यकारों पर लिखें है जिनका व्यक्तित्व और साहित्य लेखक को प्रभावित करता रहा है। इस दस संस्मरणों में भवानीप्रसाद मिश्र, शमशेर बहादुर, प्रभाकर माचवे, जैनेंद्र, ठाकुर प्रसाद सिंह, हजारीप्रसाद द्विवेदी, उमाशंकर जोशी, देवीशंकर अवस्थी, सावित्री सिन्हा आदि दिग्गज व्यक्ति हैं। इनके माध्यम से उन्होंने हर जगह अच्छाई खोजने की कोशिश की है।

इसके साथ ही उनका द्वितीय संस्मरण, 'अपने-अपने रास्ते' 2001 में प्रकाशित हुआ है। तथा तृतीय संस्मरण सन् 2007 में 'एक दुनिया अपनी' नाम से प्रकाशित हुआ है।

1.2.9 डायरी :-

मिश्र जी की डायरी की पहली किताब 'आते जाते दिन' सन् 2007 में प्रकाशित हुई है। उनके डायरी के पन्ने 'नई धारा', 'साहित्य अमृत' तथा अन्य पत्रिकाओं में भी प्रकाशित होते रहे हैं।

1.2.10 साक्षरोपयोगी साहित्य :-

'एक थी वंदना' साक्षरोपयोगी किताब का प्रकाशन सन् 1999 में हुआ है। भारत सरकार द्वारा चलाये गये साक्षरता अभियान में अपना भी कुछ दायित्व समझकर नव-साक्षरों के लिए मिश्र जी ने कुछ मात्रा में लिखा है। इस कृति में मिश्र जी ने वंदना के संघर्षपूर्ण सफल जीवन को चित्रित किया है।

1.3 पुरस्कार तथा सम्मान :-

मिश्र जी उन रचनाकारों में से एक है जो पुरस्कार तथा सम्मानों के लिए नहीं लिखते। वे पाठकों के लिए लिखते हैं। पाठक ही उनका सर्वस्व है। वे प्रगतिशील रचनाकार रहे है। किसी साहित्यिक दल से संबंधित न होने के कारण उन्हें कई महत्त्वपूर्ण सम्मानों से वंचित रहना पड़ा हैं। फिर भी वे अविरत लिखते रहें। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समाज के लिए बहुत बड़ा योगदान दिया है। इसी कारण वे अनेक पुरस्कारों तथा सम्मानों से सम्मानित होते रहे हैं। मिश्र जी सम्मान छोटा हो या बड़ा खुशी से स्वीकारते हैं। जब कोई सम्मान मिलता तो वे बहुत खुश होते हैं। सही सम्मान के बारे उनका बहुत अलग तर्क है। जब मिश्र जी को 'भारत-भारती सम्मान' से गौरवान्वित किया था तब मेरे बधाई पत्र के उत्तर में उन्होंने लिखा है ''लेखक का सही सम्मान इसी बात में होता हैं कि उसकी रचनाएँ पढ़ी जायें।''[23] वे अपने पाठक को ही महत्त्वपूर्ण सम्मान समझते हैं। उनकी रचना की सही आलोचना पाठक करते हैं। आलोचको ने उनपर कितना भी अन्याय क्यों न किया हो। उन्हें अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत किया है -

	वर्ष	सम्मान
1.	सन् 1980	'नक्षत्र' अहमदाबाद द्वारा सम्मानित
2.	सन् 1982	नागरी प्रचारिणी सभा, देवरिया द्वारा सम्मानित
3.	सन् 1984	हिन्दी अकादमी दिल्ली से 'अकादमी सम्मान'
4.	सन् 1985	प्रगतिशील लेखक संघ, आगरा द्वारा सम्मान
5.	सन् 1985	भारतीय लेखक संघटन द्वारा सम्मान
6.	सन् 1996	नागरी प्रचारिणी सभा, आगरा द्वारा सम्मान
7.	सन् 1996	उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से 'साहित्य भूषण सम्मान'
8.	सन् 1998	दयावती मोदी कवि शेखर सम्मान
9.	सन् 2001	शलाका सम्मान

वर्ष	सम्मान
10. सन् 2001	हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा सम्मान
11. सन् 2004	महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन सम्मान (केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा द्वारा)
12. सन् 2005	उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का 'भारत भारती सम्मान'
13. सन् 2007	सारस्वत सम्मान
14. सन् 2007	उदयसिंह देव सम्मान

1.3.1 सम्मानित कृतियाँ :-

मिश्र जी की कृतियों को विविध संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया हैं।

(1) हिन्दी अकादमी, दिल्ली - 'रोशनी की पगडंडियाँ' (आत्मकथा)

(2) उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान - 'ऐतिहासिक उपन्यासकार : वृन्दावन लाल वर्मा', 'हिन्दी आलोचना का इतिहास', 'जल टूटता हुआ', 'हिन्दी उपन्यास एक अर्न्तयात्रा', 'अपने लोग', 'एक वह', 'कन्धे पर सूरज', कितने बजे हैं ?', 'जहाँ मैं खड़ा हूँ', हिन्दी साहित्य : सम्वेदना और दृष्टि' आदि।

(3) आर्थर्स गिल्ड ऑफ इंडिया - 'अपने लोग' (उपन्यास) ।

इन पुरस्कृत कृतियों में उनके पीएच्.डी. का शोध-ग्रन्थ, काव्य संग्रह, उपन्यास, कहानी संग्रह, समीक्षात्मक कृतियाँ ललित निबंध संग्रह, आत्मकथा आदि किताबों का समावेश हैं।

इन सम्मानों के अतिरिक्त भारतीय लेखक संगठन, गुजरात हिन्दी प्राध्यापक परिषद, 'मीमांसा' संस्था, नई दिल्ली आदि संस्थाओं के अध्यक्ष तथा साहित्यिक संघ वाराणसी में वे प्रधान सचिव रहे हैं। साहित्य अकादमी, हिन्दी अकादमी, प्रतिष्ठित संस्थाओं, दिल्ली तथा अनेक विश्वविद्यालयों की संगोष्ठियों के अध्यक्ष रहे हैं। इनकी अनेक रचनाएँ देश के महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में अध्ययनार्थ है। साथ ही उनके साहित्य पर अनेक विश्वविद्यालयों मे. एम्.फिल. तथा पीएच्.डी. का शोध कार्य हुआ है। उनके साहित्य पर अनेक समीक्षात्मक कृतियाँ भी प्रकाशित हुई हैं। उन्हें भी विविध संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत किया गया है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि डॉ. रामदरश मिश्र जी का अनोखा व्यक्तित्व है। उनका चेहरा सदैव हँसमुख रहता हैं। अहं से दूर होने के कारण ही उन तक पहुँचना सामान्य से सामान्य व्यक्ति के लिए सहज संभव है। उनके सहज जीवन में भरपूर शक्ति और गति हैं। 82 बरस पार करने पर भी वे युवा है क्योंकि उनके जीने में एक प्रेरक शक्ति है। उनके जितने मित्र हैं उतने उपेक्षा करनेवाले भी हैं। उपेक्षा करनेवालों की ओर वे कभी ध्यान नहीं देते।

मिश्र जी मूलत: कवि है। उनमें साहित्य के बीज बहुत बचपन में मौजूद थे। उनके लेखन का क्रम काव्य, कहानी, उपन्यास तथा साहित्य की अन्य विधा ऐसा रहा हैं। उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं में लेखनी चलाई है। उनकी रचनाओं में परिवेश के प्रति गहरा लगाव है। देहाती तथा महानगरीय जीवन, दोनों को समान रूप से जीने के कारण उनकी रचनाओं में आम आदमी की पुकार सुनाई देती है। वे साहित्य में सहजता के पक्षधर हैं। साहित्य ऐसा होना चाहिए जिन्हें सामान्य से सामान्य आदमी समझ सके। इस सहजता के कारण ही उन्हें कड़ी आलोचना सहनी पड़ी है। लेकिन उनके साहित्य के सही गवाह पाठक ही हैं। उन्होंने साहित्य में परिवेशगत अनुभवों को चित्रित किया है। आज के मूल्य विघटन के युग में भी वे शाश्वत मानव-मूल्यों के प्रति जुड़े रहे हैं। साहित्य में उनकी दृष्टि सदैव प्रगतिशील रही है। उम्र के साथ ही उनके लेखन में भी प्रौढ़ता आयी है। वे जीवन को अपने ढंग से जीते हैं। अत: स्पष्ट है कि वे एक महान रचनाकार हैं। आज हिंदी साहित्य क्षेत्र में डॉ. रामदरश मिश्र जी नाम महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

संदर्भ :-

1. सं.रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, लौट आया हूँ मेरे देश, पृष्ठ -60
2. सं.डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, अभिनव प्रसंगवश (त्रैमासिक), जनवरी - जून 2002, पृष्ठ - 09
3. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, गज़ल क्र. 46, पृष्ठ - 52
4. डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, रामदरश मिश्र : रचना समय, पृष्ठ - 12
5. सं. जगन सिंह/स्मिता मिश्र, रामदरश मिश्र व्यक्ति और अभिव्यक्ति, पृष्ठ - 89-90

6. डॉ. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर, रामदरश मिश्र के उपन्यासों में समाज-जीवन, पृष्ठ - 16
7. सं.जगन सिंह/स्मिता मिश्र, रामदरश मिश्र व्यक्ति और अभिव्यक्ति, पृष्ठ - 95
8. सं.डॉ. स्मिता मिश्र, अंतरंग, पृष्ठ - 21
9. वही, पृष्ठ - 22
10. सं.जगन सिंह/स्मिता मिश्र, रामदरश मिश्र व्यक्ति और अभिव्यक्ति, पृष्ठ - 47
11. डॉ. रामदरश मिश्र, पथ के गीत, पृष्ठ - 51
12. सं. जगन सिंह/स्मिता मिश्र, रामदरश मिश्र व्यक्ति और अभिव्यक्ति, पृष्ठ - 261
13. डॉ. फूलबदन यादव, रामदरश मिश्र व्यक्तित्व और कृतित्व, पृष्ठ - 36
14. सं. स्मिता मिश्र, अंतरंग, पृष्ठ - 141
15. सं. जगन सिंह/स्मिता मिश्र, रामदरश मिश्र व्यक्ति और अभिव्यक्ति, पृष्ठ - 176,177
16. सं. स्मिता मिश्र, अंतरंग, पृष्ठ - 36
17. डॉ. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर, रामदरश मिश्र के उपन्यासों में समाज-जीवन, पृष्ठ - 54
18. नित्यानन्द तिवारी/ज्ञान चन्द गुप्त, रचनाकार रामदरश मिश्र, पृष्ठ - 263
19. डॉ. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर, रामदरश मिश्र के उपन्यासों में समाज-जीवन, पृष्ठ - 81
20. सं. प्रथम राज सिंह, नईधारा (द्वैमासिक), दिसम्बर-जनवरी - 2007, पृष्ठ - 104
21. सं. स्मिता मिश्र, अंतरंग, पृष्ठ - 37
22. सं. वेदप्रकाश अमिताभ, अभिनव प्रसंगवश (त्रैयमासिक), जनवरी-जून -2002, पृष्ठ - 113
23. रामदरश मिश्र का तिथि 27.02.2007 का हस्तलिखित पत्र, (परिशिष्ट में)

* * * *